Notification No: 561/2024

Date of Award: 24/06/2024

Name of Scholar: Govind Verma

Name of Supervisor: Prof. Dileep Kumar Shakya

Name of Department/Centre: Hindi, Faculty of Humanities and Languages

Topic of Research: HINDI KATHA-SAHITYA MEIN PRAYUKTA GALIYON KA SAMAJASHASTRIYA ADHYAYAN

Keywords: Katha-Sahitya, Samajashastra, Galiyan, Langikata, Pitrasatta, Varna-Vyvastha

Finding

गालियों का अध्ययन समाजशास्त्र का विषय है परन्तु साहित्य में इसका बहुलता से प्रयोग होता है। कहा भी जाता है 'साहित्य समाज का दर्पण है' अत: समाज में प्रयोग होने वाली समस्त आचार-विचार का साहित्य में प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। गालियों का इतिहास लगभग उतना ही पुराना है जितना कि बोलियों का। भारत ही नहीं विश्व का कोई भी देश, समाज और साहित्य सभी में गालियां पाई जाती हैं।

अतः गालियों के द्वारा मनुष्य को अपमानित, तिरस्कृत किया जाता है। गालियों के द्वारा एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति का जातीय एवं लैंगिक उत्पीड़न भी करता है। गालियां अभिव्यक्ति का समान्य माध्यम भी होती हैं। व्यक्ति जब ज्यादा परेशान होता है तो वह गालियों द्वारा अपना गुस्सा व्यक्त कर के शांत हो जाता है उसे कुछ समय के लिए सुकून मिल जाता है। अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे समाज में गालियों का प्रयोग बहुलता से होता है जो कि हमारे समाज को कलंकित करता है। एक सभ्य और शिक्षित समाज में इस तरह के शब्दों का सामान्य रूप से प्रयोग करने से बचना चाहिए और एक बेहतर समाज की निर्मिति में उत्कृष्ट साहित्य की भूमिका निर्विवाद होती है जिसमें भाषा के भी योगदान को नकारा नहीं जा सकता है।